JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# प्रसाद की प्रमुख छायावादी रचनाएं एवं संगीत

**प्रिया कुमारी[1] एवं डॉ0 रश्मि पुरियार[2]**
[1]शोधार्थी
स्नातकोत्तर संगीत विभाग
तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर–812007
[2]विभागाध्यक्ष (पूर्व)
स्नातकोत्तर संगीत विभाग
तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर–812007

**शोध–सार**

संगीत की दृष्टि से प्रसाद का काव्य विशिष्ट है। काव्य में जहाँ आकार की लघुता, लालित्य, सरसता, माधुर्य, प्रवाह एवं लयात्मकता आदि संगीतपयोगी विशेषताएं विद्यमान हैं, वहाँ भाषा और शैली भी संगीत तानुकूल है। इनके काव्य में संगीत के लिए उपयुक्त शब्द चयन, वर्ण–संगीत एवं शब्द–संगीत की अवतारणा भी दर्शनीय है। प्रसाद की प्रेम, प्रकृति, सौंदर्य, राष्ट्रीयता, रहस्य और दर्शन से संबंधित रचनाएं एवं स्फुट कवितायें विशाल और लघु आकार वाली होकर भी संगीत तत्वों से समन्वित है। प्रसाद ने जहाँ अपने काव्य में संगीत तत्वों का उल्लेख किया है वहाँ वाद्ययंत्र, राग–नामोल्लेख और नृत्य के वर्णनों से भी संगीततत्वों को प्रस्फुटित किया है। ''प्रसाद के 'चित्राधार', 'काननकुसुम', 'झरना', 'आँसू', 'लहर', और कामायनी आदि में संगीत तत्व प्रचुर मात्रा में प्राप्त होते हैं।'' इसलिये श्री रामनाथ सुमन ने 'लहर' में संगीतात्मकता का अधिक्य माना है।'' जहाँ प्रसाद के नारकों के गीत शास्त्रीय राग–रागिनियों में सहज गये हैं वहाँ उनके झरना आदि काव्यग्रंथों के गीत राग–रागिनियों में गाये जाने योग्य हैं। अतः प्रसाद के काव्य में संगीततत्वों की स्पष्ट अभिव्यक्ति हुई है।

**शब्दकुंजी :** काननकुसुम, झरना, आँसू, लहर और कामायनी आदि

## भूमिका :

प्रसाद संगीत को विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त करते हैं, यथा– प्रातः संगीत, मिलन का संगीत, मधुर संगीत भैरवी संगीत, विरह–संगीत कलरव संगीत, जीवन–संगीत आदि। संगीत के विविध रूप कवि के विविध भावों के अभिव्यंजक हैं। कहीं कहीं 'संगीत' स्वतः ही सांकेतिक हो जाता है, यथा–

**"विलसत मधुर समीर प्रवास**

**मानहुँ प्रभात को सीरो,**

**कलख मधुर विहंग संग**

**परिमुद्रित करत चिर धीरों।"[1]**

यहाँ पक्षियों के कलख आदि वर्णन से प्रातः संगीत का आभास होता है। इसी प्रकार अन्य स्थलों पर भी संगीत का संकेत उपलब्ध है। आचार्य शारंगदेव द्वारा निर्दिष्ट 'नाद' के भेद–आहत और अनाहत–प्रसाद द्वारा उल्लिखित हुए हैं, यथा

**"संहार सृजन से युगल पाद**

**गतिशील, अनाहत हुआ नाद।"[2]**

इस उदहारण में 'नाद' का प्रयोग सार्थक प्रतीत होता है। कवि ने अनाहत नाद का प्रयोग इहलोकेत्तर ध्वनि को दर्षाने की दृष्टि से किया है। अतः प्रसाद के काव्य में संगीततत्व 'नाद' की कल्पना अनूठी है। कहीं–कहीं वर्ण–मैत्री आदि के आधार पर नाद स्वतः ही ध्वनित हो जाता है, यथा–

**"रका–कुल कुल–कुल आ वोल रहा,**

**किसलय का अंचल डोल रहा,**

**लो यह लतिका भी भर लायी**

**मधु मुकुल नवल रस गागरी।"**

**"मानस सागर के तर पर,**

**क्यों लोल लहर की घातें,**

**क्ल–कल ध्वनि से हैं कहती**

**कुछ विस्मृत बीती बातें।"[3]**

प्रथम छनद में पक्षियों की कुल–कुल ध्वनि एवं लतिका रूपी सुन्दरी द्वारा कली रूपी घड़े में पराग रूपी जल को भरने की क्रिया से उत्पन्न ध्वनि नाद को अभिव्यंजित करती है। द्वितीय छनद मे 'कल–कल ध्वनि' का प्रयोग लहरों के तट पर आकार टकराने से उत्पन्न नाद को दर्षाने की दृष्टि से किया गया प्रतीत होता है।

यद्यपि प्रसाद ने 'श्रुति' शब्द का प्रयोग कर्ण आदि के अर्थ में किया है, शुद्ध सांगीतिक अर्थ में नहीं, तथापि कतिपय स्थनों में श्रुति तत्व स्वतः ही आभासित होता है। यथा–

''कंचन कंकन किंकिनि को कलानाद सुनावत।''[4]

इस पंक्ति में कंगन और करधनी का सुन्दर नारद दर्षाते हुए कवि ने श्रुति तत्व का संकेत किया है क्योंकि ''कर्णेन्द्रियगताह्य और सुनने योग्य सूक्ष्म ध्वनि को 'श्रुति' माना गया है।'' अतः यहाँ कंगन और करधनी के नाद में श्रव्य गुण और सूक्ष्म नाद विषेषता श्रुति तत्व को सिद्ध करती है।

प्रसाद ने संगीतिक, वातावरण के निर्माण हेतु 'स्वर' का प्रयोग किया है। कहीं–कहीं शुद्ध सांगीतिक अर्थ में भी 'स्वर' शब्द प्रयुक्त हुआ है। कतिपय उद्धरण द्रष्टव्य है–

**"प्रेम वेणु की स्वर – लहरी में जी–गीत सुना जा ओ"**

**"कल–कण्ठ'ध्वनि सुकोमला**

**मिलि वीणा–स्वर सों सुघत है।**

**कुष नीख छै नखै सुनै**

**जनु जादू सब ही लखात है।"**

**"गाओ नव उत्साह से रूको न पल भर के लिये,**

**कोकिल मलयज पवन में भरने को स्वर के लिये।"[5]**

यहाँ स्वर शब्द का प्रयोग सांगीतिक वातावरण की सहज अभिव्यक्ति करता है। शुद्ध सांगीतिक अर्थ में इसका प्रयोग करने के लिए शब्द को वेणु और वीणा के साथ संबद्ध किया है। इसके साथ ही पवन में स्वर–माधुर्य भरने के लिए कवि कोयल को प्रेरित करता है। अतः स्वर का प्रयोग सार्थक बन पड़ा है। कहीं–कहीं 'पंचम–स्वर का उल्लेख मिलता है

**"हिली आम की डाल चला ज्यों नवल हिंडोला**

**आह कौन है 'पंचम स्वर से कोकिल बोला।'**

**"हो नयनों का कल्याण बना**

**आनन्द सुमन विकास हो,**

**वासन्ती के वन–वैभव में**

**जिसका पंचम स्वर पिक–सा हो।"[6]**

यहाँ कवि ने कोयल के पंचम स्वर का उल्लेख करके संगीत के 'प' (पंचम) स्वर के माधुर्य का संकेत किया है। संगीत ग्रंथों में पंचम स्वर का आविर्भाव ही कोकिल ध्वनि से माना गया है। अतः कवि द्वारा प्रयुक्त कोयल का पंचम स्वर सार्थक सिद्ध हुआ है। प्रसाद की रचनाओं में कहीं–कहीं स्वतः ही स्वर तत्व आभासित हुआ है :–

**"कंकण क्वणित रणित नपुर थे**

**मुखरित या कलख, गीतों में**

**स्वर लय का होता अभिसार"[7]**

इस छन्द में 'क्वणित' और 'रणित' शब्दों से स्वर तच्व ध्वनित होता है। संगीत में श्रृति (ध्वनि) जहाँ अनुरणित होती है, वहाँ स्वरोत्पत्ति मानी जाती है। प्रसाद ने भी यहाँ 'क्वणित' से कंगन के ध्वनि को तथा रणित से नूपुर के ध्वनि स्वर को व्यक्त किया है, जिससे ध्वनि का अनुरणित होना भी अभिव्यंजित होता है। इसके अतिरिक्त स्वर स्निग्ध और चित्रहंजन भी होता है। यही स्निग्धता और रंजकता 'कवणित' और 'रणित' शब्दों में भी प्राप्त होती है। अतः स्वर तत्व इस छनद में सहज अभिव्यक्त हुआ है।

यद्यपि प्रसाद के काव्य में 'ग्राम' शब्द यत्रन्त्र ही प्राप्त होता है, तथापि उनकी रचनाओं में कतिपय स्थानों में 'ग्राम' तत्व अन्वेषित किया जा सकता है। एक उद्धरण द्रष्टव्य है :–

**"किसका है आगमन अहो आनन्दमय**
**मधुर मेघ–गर्जन–मृदंग है बज रहा**
**झिल्ली वीणा बजा रही है क्यों अभी**
**तूर्य नाद भी शिश्विगण कैसे कर रहे।"[8]**

इन पंक्तियों में मेघ–गर्जन में मृदंग के गंभीर स्वर, झिल्ली की ध्वनि में वीणा के मधुर स्वर तथा मयूरों की ध्वनि में तूर्य का स्वर सुनाई देता है। इस प्रकार सभ्ज्ञी वद्ययन्त्रों के स्वरों का समूह एक स्थल पर उपस्थित हो गया है। सांगीतिक शब्द 'ग्ताम' भी स्वर समुदाय है तथा वह स्वरों के आरोहण और अवरोहण रूप–मूर्च्छना का आधार है। अतः यहाँ वाद्ययन्त्रों का समवेत स्वर–समूह संगीततत्व ग्राम को दर्शाता है। इसके साथ ही मृदंग, वीणा और तूर्य की संगीत सृष्टि का आधार मूर्च्छनाएँ भी इसमें अन्तर्निहित हैं। इसीलिए इस छनद से अभिव्यंजित मूर्च्छनाएँ वाद्ययन्त्रों के स्वर–समूह के अधीन हैं। आशय यह है कि इस छन्द में स्वर–समूह विद्यमान है और उसके अधीन मूर्च्छनाएँ भी अभिव्यंजित होती हैं। अतः यहाँ ग्राम तत्व की स्पष्ट अभिव्यक्ति होती है। इसी प्रकार अन्य स्थलों पर भी ग्राम तत्व को खोजा जा सकता है।

कवि ने जहाँ 'मूर्च्छना' शब्द का प्रयोग स्वानुभूति की अभिव्यक्ति के लिए किया गया है, वहाँ एक भाव को दबाते हुए, दूसरे भाव को अभिव्यंजित करने के अर्थ में भी इस प्रयुक्त किया गया है उदाहरणार्थः

**"हृदय वीणा कर रही प्रस्तार अब,**
**तीव्र पंचम तान की उल्लास से।**
**बेसुरा पिक या नहीं सकता कभी,**
**इस हसीली पूर्च्छना की मानता।"**
**"जो गूँज उठे फिर नस–नस में**
**मूर्च्छना समान मचलता सा।"[9]**

प्रथम छन्द में कवि वीणा से निःसृत मूर्च्छना से परिचित होता है। यहाँ कवि ने मूर्च्छना की उन्मत्र करने की शक्ति को दर्शाया है। कवि ने मूर्च्छना शब्द द्वारा करूण भावों में आनन्द भाव की छाया तथा नवीन क्रियाओं में प्राचीन स्मृति का संचरण अभिव्यंजित है।

द्वितीय छन्द में मूर्च्छना का प्रयोग साभिप्राय है। इसमें कवि ने मधुर स्वरों के हृदय में प्रविष्ट होने पर नाना प्रकार के भावों के आरोहण और अवरोहण का संकेत किया है। अतः यहाँ पूर्वस्थित भावों को मन्द करके नवीन भावों का प्रस्फुटन करने हेतु कवि ने मूर्च्छना शब्द का प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त कहीं–कहीं उनकी रचनाओं से भी –मूर्च्छना' का संकेत मिलता है, यथा–

**"उठ–उठ गिर–गिर फिर–फिर आती,**
**नर्तित पद–चिन्ह बना जाती,**
**सिकता की रेखायें उभार–सिहर**
**भर जाती अपनी तरल।"[10]**

इन पंक्तियों में 'मूर्च्छना' स्पष्ट अभिव्यंजित है। लहरों के उठने–गिने से 'मूर्च्छना' अभिव्यक्त होती है। इसके अतिरिक्त लहरों के उत्थान पतन में एक भाव के मन्द पड़ने पर दूसरे भाव प्रादुर्भाव भी मूर्च्छना दर्शाता है। अन्यत्र भी मूर्च्छना का अवलोकन किया जा सकता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्रसाद के काव्य में जहाँ संगीत तत्वों का उल्लेख और उनकी स्वतः अभिव्यंजना होती है, वहाँ वाद्ययन्त्रों और नृत्योल्लेख से भी संगीत तत्वों का ही संकेत मिलता है। इनकी रचनाएँ राग व ताल निबद्ध कर गेय होने से भी संगीत तत्वों की अभिव्यंजक है। अतः प्रसाद–काव्य में संगीत तत्वों की सफल अवतारणा हुई है।

**संदर्भ सूची :**


1. श्री दिनानाथ शरण, ''हिन्दी काव्य में छात्रावास'', पृ0 233
2. प्रसाद ग्रन्थावली, खण्ड–1, चित्राधार, पृ0 42
3. प्रसाद ग्रन्थावली, खण्ड–1, कामायनी, पृ0 633
4. पं० फिरझ फ्राम जी, ''भारतीय श्रुति–स्वर राग शास्त्र'', पृ0 21
5. प्रसाद ग्रन्थावली, खण्ड–1, लहर, पृ0 355
6. प्रसाद ग्रन्थावली, खण्ड–1, कामायनी, आशा, पृ0 437
7. प्रसाद ग्रन्थावली, खण्ड–1, कामायनी, निर्वेद, पृ0 626
8. प्रसाद ग्रन्थावली, खण्ड–1, झरना, पृ0 242
9. प्रसाद ग्रन्थावली, खण्ड–1, कामायनी, संघर्ष, पृ0 603
10. प्रसाद ग्रन्थावली, खण्ड–1, झरना, पृ0 299
11. प्रसाद ग्रन्थावली, खण्ड–1, लहर, पृ0 379
12. प्रसाद ग्रन्थावली, खण्ड–1, आँसू, पृ0 306